



Cambridge IGCSE™

HINDI AS A SECOND LANGUAGE

0549/02

Paper 2 Listening

October/November 2020

TRANSCRIPT

Approximately 35–45 minutes

This document has **8** pages. Blank pages are indicated.

Cambridge Assessment International Education
Cambridge IGCSE
November 2020 Examination in Hindi as a Second Language
Paper 2 Listening Comprehension

Turn over now

[Pause 5 seconds]

FEMALE: अभ्यास 1: प्रश्न 1-6

प्रश्न 1 से 6 के लिए आप क्रमानुसार कुछ संक्षिप्त संवाद सुनेंगे। उनके आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नीचे दी गई रेखा पर लिखिए। आपके उत्तर जहाँ तक हो सके संक्षिप्त होने चाहिए।

आपको प्रत्येक संवाद दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]

[Signal]

[Pause 3 seconds]

MALE: संवाद 1

FEMALE: * नमस्कार। भारतीय स्टेट बैंक की ओर से आपका स्वागत है। यदि आप अपने बचत या जमा खाते के बारे में जानना चाहते हैं तो 1 डायल करें। यदि आप अपने क्रेडिट कार्ड की बकाया राशि के बारे में जानना चाहते हैं तो 2 डायल करें। यदि आप पैसा लगाने के बारे में सलाह लेना चाहते हैं तो 3 डायल करें। यदि आप कुछ और जानना चाहते हैं तो हमारे ग्राहक सेवा अधिकारी के खाली होने तक प्रतीक्षा करें। **

[Pause 10 seconds]

[Repeat from * to **]

MALE: संवाद 2

FEMALE: * महिला: भाई साहब, ये रबड़ी कब की बनी है?

पुरुष: अभी, लगभग एक घंटा पहले तैयार हुई है। वैसे भी हम पुरानी मिठाइयाँ नहीं बेचते।

महिला: नहीं, गर्मी का मौसम है न, इसीलिए पूछ रही थी।

पुरुष: आपको रबड़ी घर ले जानी है या किसी को देनी है?

महिला: जी, घर के लिए लेनी है और बाहर भी भेजनी है।

पुरुष: घर के लिए तो रबड़ी ठीक है। लेकिन बाहर भेजने के लिए कोई और मिठाई चुन लीजिए।

महिला: क्यों, क्या रबड़ी शाम तक भी नहीं चलेगी?

पुरुष: रसगुल्ले तो चल सकते हैं। रबड़ी चार-पाँच घंटे से ज़्यादा नहीं टिकती। **

[Pause 10 seconds]

[Repeat from * to **]

FEMALE: संवाद 3

MALE: * यात्री कृपया ध्यान दें। नई दिल्ली से पटना होकर हावड़ा जाने वाली राजधानी एक्सप्रेस शाम 4 बजकर 55 मिनट पर प्लेटफॉर्म नंबर 14 से रवाना होगी। दिल्ली से जालंधर होकर ऊधमपुर जाने वाली माता एक्सप्रेस जम्मू-कश्मीर में हो रहे हिमपात के कारण बंद है। लखनऊ से कानपुर होकर नई दिल्ली आने वाली शताब्दी एक्सप्रेस तकनीकी गड़बड़ी के कारण एक घंटा देरी से आ रही है। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]

MALE: संवाद 4

FEMALE: * महिला: नमस्कार। इधर, कैमरे की तरफ देखिए।

पुरुष: ओह, माफ़ कीजिए मुझे कैमरे के बारे में मालूम नहीं था।

महिला: नहीं, कोई बात नहीं। वैसे कहाँ से आ रहे हैं आप?

पुरुष: जी, लंदन से।

महिला: आपका वीज़ा कहाँ है?

पुरुष: मुझे वीज़ा की ज़रूरत नहीं है। मैं तो विदेशी भारतीय नागरिक हूँ।

महिला: तो फिर अपना विदेशी भारतीय नागरिकता का कार्ड दिखाइए।

पुरुष: जी, यह लीजिए!

महिला: ठीक है। धन्यवाद। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]

MALE: संवाद 5

FEMALE: * भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल उत्पादक देश बन गया है। दूरसंचार मंत्री मनोज सिन्हा ने बताया कि भारत ने मोबाइल फ़ोन उत्पादन के मामले में वियतनाम को पीछे छोड़ दिया है। भारतीय मोबाइल संघ के आंकड़ों के मुताबिक देश में मोबाइल फोन का वार्षिक उत्पादन 30 लाख से बढ़कर एक करोड़ 10 लाख हो चुका है जो वियतनाम से कहीं ज़्यादा है। देश में फ़ोन उत्पादन बढ़ने के कारण इनका आयात भी घटकर आधे से कम रह गया है। विश्व का सबसे बड़ा मोबाइल उत्पादक चीन है। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]

FEMALE: संवाद 6

MALE: * पुरुष: बेटा, लगता है तुमको कहीं देखा है। क्या हम पहले मिल चुके हैं?

महिला: हाँ अंकल, मुझे भी आपका चेहरा पहचाना हुआ सा लगता है।

पुरुष: कहीं तुम सुनीता के साथ तो नहीं पढ़ती थी?

महिला: नहीं अंकल, मैं तो भोपाल में पढ़ी हूँ।

पुरुष: अब समझा। भोपाल में तो मेरा भाई रहता है। गणित पढ़ता है।

महिला: नहीं अंकल, मैं तो सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान में पढ़ती थी। आप भारत भवन जाते हैं क्या?

पुरुष: अरे! अब याद आया। तुम ही तो भारत भवन की भाषण प्रतियोगिता में प्रथम आई थीं! **

[Pause 10 seconds]

[Repeat from * to **]

[Pause 10 seconds]

FEMALE: यह अभ्यास 1 का अंतिम संवाद था। थोड़ी देर में आप अभ्यास 2 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 2 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 2: प्रश्न 7

कैलीफ़ोर्निया के तकनीक आविष्कार संग्रहालय के संग्रहापाल नील देसाई के साथ नए क्षितिज की संवाददाता प्रभा पाटिल की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे छोड़े गए खाली स्थानों (a-h) को भरिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]

[Signal]

[Pause 3 seconds]

FEMALE: * प्रभा: नील देसाई जी, नए क्षितिज के पाठकों की ओर से आपका स्वागत है।

MALE: नील: धन्यवाद, प्रभा जी।

प्रभा: नील जी, आपको अपने तकनीक आविष्कार संग्रहालय की बढ़ती लोकप्रियता और धाक की मुख्य वजह क्या लगती है?

नील: आपकी बात सही है प्रभा जी। तकनीक आविष्कार संग्रहालय को बने लगभग बीस साल ही हुए हैं। फिर भी, हमारे कुछ कार्यक्रम ऐसे हैं जो हमें दूसरे संग्रहालयों से अलग और अनूठा बनाते हैं। जैसे, विज्ञान और तकनीक के कठिन विषयों को सरल और रोचक बनाना, नए आविष्कारों और समाधानों की खोज के लिए मंच प्रदान करना और जलवायु जैसे सामयिक विषयों के प्रति जागरूकता पैदा करना।

प्रभा: यानी आपका संग्रहालय वास्तव में एक तरह की प्रायोगिक पाठशाला है।

नील: जी हाँ। एक ऐसी पाठशाला जो आपको तकनीकों और आविष्कारों के बारे में जानने के साथ-साथ नई तकनीकों के विकास में अपने हाथ आजमाने और नए सिरे से सोचने को प्रेरित करती है। मिसाल के तौर पर हमारी सोशल रोबोट गैलरी में आप दुनिया भर के कारखानों और मशीनों में काम करने वाले रोबोटों के बारे में जानने के साथ-साथ कोई नया रोबोट बनाने की कोशिश भी कर सकते हैं। हमारे विशेषज्ञ पहले आप को आवश्यक बुनियादी प्रशिक्षण देते हैं। उसके बाद आप रोबोट बनाने की कोशिश कर सकते हैं।

प्रभा: बच्चों से हमने किसी साइबर जासूस प्रदर्शनी के बारे में भी सुना है।

नील: जी हाँ। साइबर जासूस प्रदर्शनी में इंटरनेट सुरक्षा के बारे में सिखाया जाता है जो आजकल पूरी दुनिया के लिए एक बड़ी चुनौती बन चुकी है। इस प्रदर्शनी में पहले आपको सिखाया

जाता है कि गुप्त संदेशों को कैसे खोलते हैं, ट्रोजन यानी छिपे प्रोग्रामों और वायरसों को कैसे पहचानते हैं और नेटवर्क को कैसे सुरक्षित करते हैं।

प्रभा: टैक-स्टूडियो के बारे में भी काफ़ी सुना है। वहाँ क्या होता है?

नील: टैक-स्टूडियो एक विशालकाय गैलरी है जहाँ विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरी, गणित और कला से जुड़ी एक कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इस कार्यशाला में लोगों को ऐसे कंप्यूटर ऐप बनाना सिखाया जाता है जिनसे सामाजिक मुद्दों को सुलझाने में मदद मिले। इसके अलावा निरंतर इस बात पर विचार किया जाता है कि समाज को बेहतर बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का प्रयोग कैसे करें।

प्रभा: यानी समाज को बदलने वाली तकनीकों का विकास करने की बजाए ऐसी तकनीक का विकास करने पर जोर दिया जाता है जो समाज और परिवेश की ज़रूरतों को पूरा कर सके।

नील: जी हाँ, इसी को समुचित तकनीक भी कहते हैं। इसके अलावा आजकल हमारे शरीर की दुनिया पर भी एक प्रदर्शनी चल रही है। इस प्रदर्शनी में आप अपने शरीर के भीतर जाकर देख सकते हैं कि हमारे अंग-प्रत्यंग किस तरह काम करते हैं। मानव त्वचा के नीचे छिपी इस दुनिया के रहस्य जानकर चिकित्सा के विद्यार्थी भी दाँतों तले उंगली दबाने लगते हैं।

प्रभा: और बाहर से यह जो गुंबद जैसा दिखाई देता है उसके भीतर क्या है?

नील: इसमें अंतरिक्ष में दिलचस्पी रखने वालों के लिए एक गैलरी है जहाँ आप अमरीकी अंतरिक्ष संस्था नासा के यान की सवारी करके अंतरिक्ष यात्रा का रोमांचक अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।

प्रभा: नील देसाई जी, तकनीक आविष्कार संग्रहालय की इतनी रोचक जानकारी देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

नील: आपका भी धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 2 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]

[Repeat from * to **]

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 2 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 3 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 3 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3: प्रश्न 8-15

पश्चिमी अफ्रीका के देश लाइबेरिया की किशोर फ़ुटबॉल खिलाड़ी जैसिका क्वाची के साथ खेल पत्रकार अतुल दास की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे दिए गए प्रत्येक कथन में रेखांकित की गई ग़लती को सही शब्दों या वाक्यांश का प्रयोग करते हुए ठीक कीजिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]

[Signal]

[Pause 3 seconds]

- MALE:** * अतुल: जैसिका क्वाची, खेल-जगत के मंच पर आपका स्वागत है।
- जैसिका: धन्यवाद, अतुल जी। भारत के खेल-प्रेमियों के बीच आकर अच्छा लग रहा है।
- अतुल: हम सभी को बहुत अच्छा लग रहा है जैसिका। सबसे पहले तो अपने और अपने शहर के बारे में थोड़ा बताइए। हमारे युवा साथी आपके बारे में जानने को काफी बेचैन हैं।
- जैसिका: तब तो उन्हें मायूसी ही होगी। क्योंकि मेरा परिचय कुछ खास नहीं है। हमारा घर लाइबेरिया की राजधानी मनरोविया की एक कच्ची बस्ती में है। हमें बिजली-पानी जैसी बुनियादी सुविधाओं के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है। घरों में शौचालय तक नहीं हैं।
- अतुल: ऐसे में आपने फुटबॉल खेलना कैसे और कहाँ से सीखा?
- जैसिका: इसकी भी एक लंबी कहानी है। मेरी माँ नहीं चाहती थीं कि मुझे भी उनकी तरह मछली बेच कर पेट पालना पड़े। इसलिए उन्होंने मुझे स्कूल में भर्ती करा दिया। वे बाज़ार से थक कर लौटतीं और घर के काम में जुट जातीं। वैसे स्कूल में तो मैं कुछ खास नहीं सीख पाई, लेकिन स्कूल से घर लौट कर गली के बच्चों के साथ फुटबॉल खेलना शुरू कर दिया।
- अतुल: क्या मनरोविया में बच्चियाँ भी फुटबॉल खेलती हैं?
- जैसिका: नहीं। यही तो समस्या थी। बस्ती के कुछ लड़के शाम को फुटबॉल खेला करते थे। लेकिन वे मुझे अपने साथ खेलाने को राज़ी नहीं होते थे। उन्हें लगता था कि लड़कियों को फुटबॉल नहीं खेलना चाहिए। यह उनका खेल नहीं है।
- अतुल: तो फिर आपने क्या किया?
- जैसिका: कुछ नहीं, बस हार नहीं मानी। फुटबॉल खेलने वाले लड़के मुझसे उम्र में भी काफी बड़े थे। लेकिन मेरी ज़िद को देखते हुए पहले तो उन्होंने मुझे गंद को उठा-उठा कर लाने का काम सौंपा। उसके बाद धीरे-धीरे मेरे पाँवों की फुर्ती देखकर साथ में खेलाना भी शुरू कर दिया। कुछ ही दिनों में मैं उनको हराने लगी।
- अतुल: यानी आपके भीतर फुटबॉल खिलाड़ी की नैसर्गिक प्रतिभा थी। उसके बाद क्या हुआ?
- जैसिका: एक दिन मनरोविया की फुटबॉल अकादमी के एक सदस्य ने मुझे खेलते हुए देख लिया। उन्होंने मुझे मैदान में खेलने का न्योता दिया। वहाँ मेरी कला देखकर वे दंगे रह गए और उन्होंने मेरी माँ से संपर्क किया।
- अतुल: और आपकी माँ की प्रतिक्रिया क्या थी?
- जैसिका: पहले तो माँ को समझ में ही नहीं आया कि अकादमी वाले चाहते क्या थे? वे भी यही समझती थीं कि फुटबॉल तो लड़कों का खेल है। लेकिन अकादमी वालों ने उन्हें समझाया कि अकादमी में उनकी लड़की को फुटबॉल के प्रशिक्षण के साथ-साथ पढ़ाया भी जाएगा। यह सुनकर वे तैयार हो गईं।
- अतुल: तो, आप फुटबॉल अकादमी में भर्ती हो गईं!
- जैसिका: जी हाँ। लेकिन मनरोविया की फुटबॉल अकादमी में खेलने वाली मैं पहली लड़की थी। इससे पहले किसी ने लड़की को फुटबॉल के मैदान में खेलते नहीं देखा था। मेरी लड़कों जैसी पोशाक देखकर लड़के मुझे लड़का कहकर चिढ़ाते भी थे।
- अतुल: आपको बीबीसी ने वर्ष के सर्वश्रेष्ठ फुटबॉल खिलाड़ी के पुरस्कार के लिए भी नामांकित किया था। क्या आपको मिला वह पुरस्कार?
- जैसिका: नहीं, पुरस्कार तो नहीं मिला। हाँ, एक प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए पहली बार विमान में सवारी करने का मौका मिला। यह मेरे लिए रोमांचक अनुभव था।

अतुल: अच्छा आपको फुटबॉल के खेल का कौन सा पहलू सबसे रोचक लगता है?

जैसिका: मुझे लड़कों को हराना अच्छा लगता है। मैं उनसे कतई नहीं डरती और उनसे बेहतर खेलती हूँ। यह सही है कि बड़े स्तर की प्रतियोगिताओं में लड़कों के साथ खेलने का अवसर नहीं मिलता। लेकिन घरेलू प्रतियोगिताओं में मैंने कई बार लड़कों को हराया है।

अतुल: जैसिका क्वाची, अपने जीवन और फुटबॉल यात्रा पर रोचक बातचीत के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

जैसिका: मुझे मंच देने के लिए आपका भी धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3 का यह संस्मरण अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]

[Repeat from * to **]

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 4 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 4 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 4: प्रश्न 16–23

कारोबारों के सामाजिक दायित्व पर समाजशास्त्री धनंजय बागची के विचारों को ध्यान से सुनिए और निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए A, B अथवा C में से किसी एक विकल्प को सही [✓] का निशान लगा कर चुनिए।

उनके विचार आपको दो बार सुनाए जाएँगे।

[Pause 5 seconds]

[Signal]

[Pause 3 seconds]

MALE: * अगर इतिहास के पन्नों में लौटें तो ऐसा नहीं है कि लोक कल्याण के काम सिर्फ बड़े सोच रखने वाले महान लोगों ने ही किए हों। ऐसे कामों में कारोबारी लोग भी पीछे नहीं रहे।

सोलहवीं सदी में इस सिलसिले में राजस्थान में बावड़ी बनाने का काम काफी हुआ, मकसद था सूखे धूल भरे मैदानों में पहुँचे घुमक्कड़ों की प्यास बुझाना। हालाँकि इस काम को तब कॉरपोरेट या कारोबारी जगत के सामाजिक दायित्व के रूप में नहीं देखा गया लेकिन इसके पीछे भावना बहुत कुछ वैसी ही थी। इसके बाद लोगों के सामने टाटा समूह के संस्थापक जमशेदजी टाटा का नाम सामाजिक दायित्व के मानक के रूप में सामने आया, जिन्होंने गाँधी जी के इस विचार को अपने दिल में बसा लिया कि व्यापारियों को इस तरह से काम करना चाहिए कि उनके पास जो धन है वह जनता का है और वे उसके रखवाले भर हैं।

हालाँकि कॉरपोरेट या कारोबारी सामाजिक दायित्व अक्सर सुना जाने वाला जुमला है लेकिन इसे परिभाषित करना थोड़ा मुश्किल है। बॉस्टन विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ ब्रैंडली गॉगिस कहते हैं, “बहुत से लोग ऐसा सोचते हैं कि कारोबारी सामाजिक दायित्व का सवाल बहुत कुछ चैरिटी या लोकोपकार से जुड़ा है, लेकिन हकीकत में यह उससे कहीं बड़ी बात है। यह अपने नज़रिए को व्यापक बनाने की कोशिश है जिसमें हम देखते हैं कि कोई कंपनी अपने मूल्यों को व्यवहार में किस तरह अमल में लाती है, उनके उत्पाद किस तरह के हैं, कर्मचारियों से व्यवहार कैसे किया जाता है, पर्यावरण को लेकर नज़रिया क्या है और किस तरह से कंपनी चलाई जा रही है।”

कारोबारी सामाजिक दायित्व को अगर समग्र रूप से देखा जाए तो इससे किसी भी कंपनी की छवि में सुधार तो होता ही है, इससे कर्मचारियों की भर्ती और उनके मनोबल पर भी असर पड़ता है। योग्य उम्मीदवार अब सिर्फ मोटी तनख्वाह की ही माँग नहीं करते बल्कि वे यह भी देखते हैं कि वे उसी कंपनी में काम करें जिसकी छवि भी सकारात्मक हो।

कारोबारी नेतृत्व को भी अब यह स्वीकार करने में हिचक नहीं रही कि इसके बारे में उनके पहले के प्रयासों में तालमेल और निरंतरता का अभाव था। अब उनको यह समझ में आ गया है कि महज़ परोपकारी संस्थाओं को चैक काट कर देने से ही कारोबारी जिम्मेदारियाँ पूरी नहीं होतीं। यह बात विदेशी कंपनियों के लिए कितनी अहम है, इसका अंदाज़ा इससे लग सकता है कि कारोबारी संघ ने अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को बेहतर ढंग से निभाने वाली विदेशी कंपनियों के लिए एक पुरस्कार रखा है जिसे वर्ष के अंत में दिया जाता है।

अमरीका की एक सलाहकार कंपनी इस पुरस्कार की विजेता कंपनियों में शामिल है। इस कंपनी ने अपनी कारोबारी सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने के लिए ज़मीनी स्तर पर काम शुरू करने का दृष्टिकोण अपनाया है। कंपनी के मुख्यालय की तरफ से आयोजित होने वाले राष्ट्रीय रक्तदान शिविरों में हमेशा ही भारी तादाद में लोग हिस्सा लेते आए हैं। इसके अलावा यह कंपनी अखिल भारतीय दृष्टिबाधित महासंघ में रोज़गार के लिए चल रहे कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम को भी आर्थिक और तकनीकी सहायता उपलब्ध कराती है।

यह सलाहकार कंपनी ऐसी मानव संसाधन एजेंसियों के साथ मिलकर काम करती है जो खुद के लिए कर्मचारी चुनने के साथ-साथ दूसरे कारोबारी क्षेत्रों में भी पहुँचती हैं। वहाँ उनकी कोशिश इस तथ्य को सामने लाने की होती है कि किस तरह दृष्टिदोष के शिकार व्यक्ति भी कर्मचारी के रूप में समाज के लिए महत्वपूर्ण हो सकते हैं। कंपनी ने इसी तरह का एक स्नातक अपने ऑफ़िस के लिए भी चुना है जबकि कई दूसरे विद्यार्थियों को आईटी कंपनियों में तकनीकी लेखक और कॉल सेंटर कर्मचारी के रूप में चुना गया है।

दृष्टिबाधित महासंघ के अधिकारी ऐसे मददगारों से उकता चुके हैं जो दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को खाना खिलाने का प्रस्ताव करते हैं। वे कहते हैं, “सभी उन्हें भोजन और आवास देने को तैयार हैं लेकिन कोई भी उन्हें इस ढंग से प्रशिक्षित नहीं करना चाहता कि वे बाज़ार में अपने दम पर मुकाबले में खड़े हो सकें।” अपना प्रशिक्षण पूरा करने वाले स्नातकों के लिए यह ऐसा उपहार है जो जीवन भर के लिए है। **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 4 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 1 minute]

FEMALE: अभ्यास 4 और यह परीक्षा समाप्त हुई।

This is the end of the examination.

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge Assessment International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge Assessment International Education is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of the University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which itself is a department of the University of Cambridge.